International Journal of Applied Research 2021; 7(5): 370-373

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(5): 370-373
www.allresearchjournal.com
Received: 19-02-2021
Accepted: 06-04-2021

रविभूषण तिवारी
शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पी.एन. मिश्र
आचार्य शिक्षा, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रविभूषण तिवारी
शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

रविभूषण तिवारी एवं डॉ. पी.एन. मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोधकार्य में समष्टि के रूप में रीवा जिले के समस्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की कुल संख्या होगी। चूंकि समस्त समष्टि पर शोध कार्य करना असंभव नही, पर कठिन है इसलिए शोधार्थी ने समष्टि से उचित इकाईयों का चयन हेतु संभाव्य – आदर्श की यादृच्छिक विधि की लाटरी विधि का प्रयोग करके 360 शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा 1800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। शिक्षा के स्वरूप में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। माध्यमिक शिक्षा समूची शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के समान है। माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र के सामाजिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है। यह शिक्षा उन नवयुवकों को शिक्षित करती है जो देश के समाजिक निर्माण में प्रभावशाली हो सके। ऐसी स्थिति में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की भूमिका के निर्वाह की अनिवार्यता स्वतः ही सुस्पष्ट हो जाती है। शिक्षकों की भूमिका निर्वाह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनके अध्यापन का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूटशब्द : रीवा जिला, माध्यमिक विद्यालय, सामाजिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना:

शिक्षा मानव विकास का मूल आधार है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन कर उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। पेस्टालाजी ने घर को शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान और बालक की प्रथम पाठशाला माना है। इस पाठशाला में बालक की माता उसकी प्रथम शिक्षिका होती है। शिक्षा की दृष्टि से पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का प्रभाव बालक के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। घर में मानवीय एवं सामाजिक जीवन का विकास होता है। इसके लिए घर में सुव्यवस्था तथा अनुकूल वातावरण और मनोवैज्ञानिक शैक्षिक वातावरण का होना आवश्यक है। पारिवारिक वातावरण के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए माण्टेसरी ने विद्यालय में घर के वातावरण की ही भाँति प्रेमयुक्त वातावरण बनाने का सुझाव दिया और विद्यालयों को बालकों का घर कहा है।

व्यक्ति और समाज के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि मानव संस्कृति की विकास यात्रा पर दृष्टिपात करें तो यही पाएँगे कि व्यक्ति और समुदाय, दोनों ही स्तरों पर वांछित लक्ष्यों को पाने के लिए सभी सभ्य समाजों में शिक्षा की संस्था की संकल्पना की गई। देश–काल में बदलाव के साथ शिक्षा की भूमिका और स्वरूप में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं। शिक्षा के उद्देश्यों, विषय–वस्तु, माध्यम, अध्यापन और शिक्षकों की तैयारी आदि में भी इन परिवर्तनों का अवलोकन किया जा सकता है। सारी विविधताओ के बावजूद यह मानना उचित जान पड़ता है कि शिक्षा की पूरी संरचना और प्रक्रिया कुछ सार्वभौमिक मूल्यों के प्रति समर्पित है। भारतीय संदर्भ में 'सा विद्या या विमक्तये' और 'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' कह कर हमारे शिक्षा या विद्यार्जन को एक मुक्तिदायी उपक्रम माना गया है।

वर्तमान समय में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ–साथ सामाजिक स्थिति एवं मान्यताओं में भारी बदलाव हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनोसामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति से समृद्ध थी

जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य मात्र का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। इसके साथ–साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक ढ़ाँचे धार्मिक विचारधाराओं से सिंचित थे। समाज के बदलते स्वरूप के साथ–साथ उसकी संस्कृति भी बदलती जा रही है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रह गया है। प्राचीन काल में शिक्षक का स्थान सर्वोपरि था। अध्यापन करना उसका व्यवसाय नहीं अपितु जीवन का एक पवित्र लक्ष्य था।

शिक्षक – समाज और समय की मांग, के अनुसार विद्यालय में अनेक–अनेक क्रियाओं को आयोजित करता है। विद्यार्थियों की विचार शक्ति को उत्प्रेरित करता है। अनेक प्रकार के मार्गों का उल्लेख करता है और बालक को सही रास्ता चयन कराने में सहायता करता है। बालक को समझता हैं। उसकी योग्यताओं, क्षमताओं का पता लगाना, उसकी रुचियों व अभिरुचियों को जानना, उसके व्यक्तित्व को पहचानना, उसके गुणों और कमियों को जानना और उनके आधार पर उसकी अध्ययन योग्यताओं का अनुमान करके सही दिशा–निर्देश देना, शिक्षक का आधारभूत काम है।

2. अध्ययन की आवश्यकता :

समाज में नियंत्रण, समाज की एक अत्यन्त मौलिक दशा है और इसके अभाव में सफल समाज की कल्पना कराई नहीं जा सकती। आज भारतीय समाज बदलाव के दौर से गुजर रहा है और बदलाव के फलस्वरूप नवीन परिस्थितियों से तालमेल बैठा लेना अत्यंत ही दुरूह कार्य होता है। शोध के माध्यम से सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया, उसके प्रकार एवं कारण का ज्ञान होता है इससे विनाशकारी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण स्थापित करने में सहयोग काफी मिलता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- रीवा जिले में माध्यमिक विद्यालयों की जानकारी प्राप्त करना।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ :

वैज्ञानिक शोध का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण परिकल्पना ही माना जाता है। शोध कार्य आरम्भ करने से पहले ही शोध के कारणों और परिणामों के सम्बन्ध में शोधकर्ता एक सुनिश्चित अवधारणा तैयार कर लेता है और उसे परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है। शोधकर्ता परिकल्पना की मदद से जीवन के अनजाने क्षेत्रों में प्रवेश करता है और शोध क्षेत्र से सम्बन्धित वास्तविक संमकों को प्रकाश में लाता है। परिकल्पना के माध्यम से शोधकर्ता शोध के प्रारम्भिक जानकारी एकत्रित करता है और इसकी सहायता शोधकर्ता स्वयं की शोध कार्यक्रम की स्वरूप का निर्माणक करता है। परिकलपना जो कि मानव के ज्ञान के पूर्वानुमान पर आधारित होते हैं। अतः परिकल्पना निरीक्षण एवं परिवर्तन लाने की बहुत अधिक आवश्यकता होती है।

शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र केवल रीवा जिले तक ही सीमित है जिसके अंतग्रत कुल 9 विकासखण्ड–रीवा, सिरमौर, जवा, हनुमना, मऊगंज, रायपुर कर्चुलियान, गंगेव, नईगढ़ी एवं त्योंथर हैं। शोधकर्ता द्वारा जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर उनमें से कुल 90 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। चयनित विद्यालयों 4–4 शिक्षक चयनित कर कुल 360 शिक्षक और प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 10 छात्र और 10 छात्राएं चयनित कर कुल 1800 छात्र–छात्राओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति के माध्यम से साक्षात्कार अनुसूची बनाकर सर्वेक्षण किया गया है। इस दृष्टि से यह अध्ययन अनुभवाशित एवं सैद्धान्तिक दोनों दृष्टियों से परिपूर्ण है।

6. अध्ययन विधि :

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ःद्धए ैण्क्ण्ए ष्जष ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण :

शोधार्थी ने न्यादर्श में चयनित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण तथा शोध कार्य करने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से चौधरी, एन.के. (2014)[1], कुमारी, विनीता एवं कुमार, रमेश (2018)[2], पाण्डेय, के.पी., (1985)[3], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], मेहता, सी. (1970)[5], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6], सक्सेना, राधा रानी (2002)[7] एवं कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार (2021)[8] ने शोध विधि एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय :

मध्यप्रदेश के उत्तरीपूर्वी भाग में स्थित रीवा जिले का आकार त्रिभुजाकार है जो मध्यप्रदेश राज्य का एक सीमान्त क्षेत्र है। रीवा जिला मध्यप्रदेश के पूर्वोत्तर हिस्से में लगभग 24.18^0 अंश से 25.12^0 अंश उत्तरी अक्षांश और 81.02^0 अंश 82.20^0 अंश पूर्वी देशान्तर के मध्य तक फैला हुआ है।[9] इस जिले के उत्तरी भाग में उत्तरप्रदेश का इलाहाबाद, बांदा जिले और पूर्वोत्तर क्षेत्र में मिर्जापुर जिला स्थित है, दक्षिणी क्षेत्र में शहडोल और पश्चिमी

क्षेत्र में रीवा संभाग का सतना जिला स्थित है, पूर्व दक्षिण में सीधी व सिंगरौली जिले की सीमाओं से लगा हुआ है, जिले की सर्वाधिक लम्बाई पूर्व से पश्चिम लगभग 125 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई लगभग 96 किलोमीटर है। यह भूभाग दक्षिण दिशा में कैमोर की पर्वत श्रृंखला से आच्छादित है और जिले के मध्य भाग में विन्ध्यांचल पर्वत की श्रेणियां स्थित है। [10] जिले का सम्पूर्ण 6287.5 वर्ग किलोमीटर है जो मध्यप्रदेश राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 1.42 प्रतिशत है। जिले के 66625 हेक्टेयर भूभाग पर पहाड़ियां है और शेष भूभाग कृषि कार्य में प्रयोग की जाती है। जिले की समुद्र तल की ऊँचाई 980 फीट है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक – 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का सार्थकता का स्तर			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम	0	0ण्00	0	0ण्00
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम	248	27ण्56	238	26ण्44
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम	487	54ण्11	510	56ण्67
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम	165	18ण्33	152	16ण्89

विश्लेषण एवं व्याख्या :

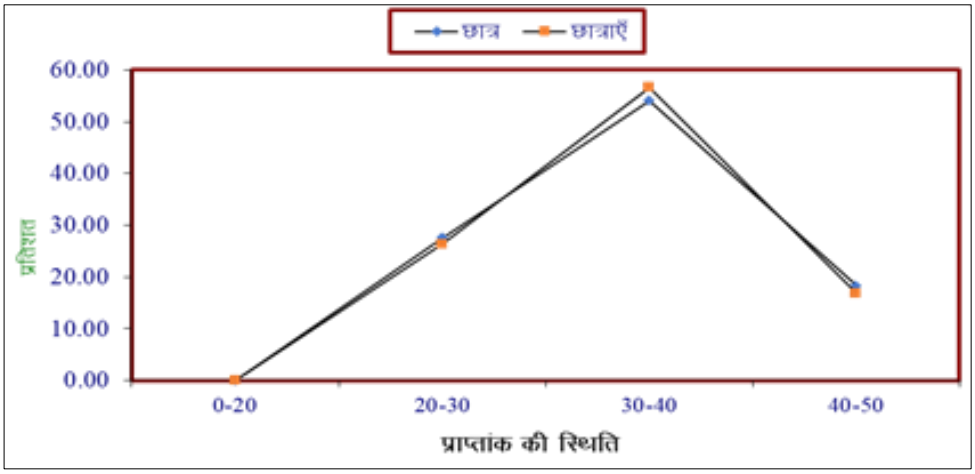

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में न्यादर्श हेतु चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 1800 छात्र–छात्राओं में से 248 छात्र एवं 238 छात्राओं ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 487 छात्र एवं 510 छात्राओं ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 165 छात्र एवं 152 छात्राओं ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के 27.56 प्रतिशत छात्र एवं 26.44 प्रतिशत छात्राओं ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 54.11 प्रतिशत छात्र एवं 56.67 प्रतिशत छात्राओं ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 18.33 प्रतिशत छात्र एवं 16.89 प्रतिशत छात्राओं ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

सारणी क्र. 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (छ)		900	900
मध्यमान (ड)		34.08	34.04
मानक विचलन ैक)		6.71	6.51
क्रान्तिक निष्पत्ति (ब्ण्ण्द्ध		0.11	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 34.08 तथा मानक विचलन 6.71 है। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 34.04 तथा मानक विचलन 6.51 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्ण्ण् ज्मेज) किया गया, जिसमें ब्ू का मान 0.11 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1. 64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.33 से कम है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष :

शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की सामाजिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। शिक्षा से जुड़ी नीति के निर्माण में गहन विचार–विमर्श से तब लाभ मिलता है जब एक 'समग्र दृष्टि (टपेपवद) भी विद्यमान होती है। यह 'समग्र दृष्टि सामाजिक–सांस्कृतिक सहित अनेक परिप्रेक्ष्यों को समग्रता में देखने से विकसित होती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक निर्देशक व पथ प्रदर्शक और सहायक की भूमिका अदा करता है। शिक्षक बालक की अभिरुचियों के अनुसार शिक्षा की सामग्री का संकलन और प्रस्तुतीकरण करता है। साथ ही शिक्षण में नई एवं सामयिक विधियों एवं नव प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी उपकरणों का प्रयोग करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. चौधरी, एन.के. . शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार, शिक्षा प्रकाशन जयपुर, 2014; 326–327
2. कुमारी, विनीता एवं कुमार, रमेश – विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन, Multidisciplinary Academic Research 2018;15(1):927-933.
3. पाण्डेय, के.पी. – मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
4. गुप्ता एस.पी. – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता, सी. – नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. – भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. सक्सेना, राधा रानी (2002) –''उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक'', जयपुर : क्लासिक पब्लिकेशन्स, 2002.
8. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार – सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research 2021;7(1):400-403.
9. मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान एक दृष्टि में, उपकार प्रकाशन, आगरा, 2002.
10. रीवा दर्शन, गायत्री पब्लिकेशन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स मध्यप्रदेश, संस्करण, 2013.